**SET : I**

# COUNCIL OF CBSE AFFILIATED SCHOOLS IN THE GULF
## GULF SAHODAYA EXAMINATION, FEBRUARY/MARCH 2009
## HINDI

Code No. 9261

Class : IX — Max. Marks : 100

Date : 25 FEB 2009 — Duration : 3 Hours

निर्देश :

(i) इस प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं – क, ख, ग और घ।

(ii) चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथासंभव प्रश्नों के उपभागों के उत्तर क्रमानुसार दीजिए।

### खण्ड 'क'

प्रश्न-1 निम्न गद्यांशों को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दीजिए:

मनुष्य को अपने साथियों का चुनाव सोच समझकर करना चाहिए। साथियों के आचारण का प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। सत्संगति का प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव हमारे जीवन की सफलता पर भी पड़ता है। अच्छे मित्र हमारे संकल्पों में दृढ़ साधक सिद्‌ध होते हैं। उनके सद्‌गुणों से प्रेरणा पाकर हम दृढ़चित्त, दृढ़ संकल्प होकर विकास की ओर बढ़ते हैं।

अच्छे लोगों का साथ मिलने से मनुष्य का जीवन दर्शन ही बदल जाता है। इससे मनुष्य में परोपकार, दया, विवेक और साहस जैसे गुण आते हैं। स्वाति नक्षत्र से गिरनेवाली एक बूँद भिन्न-भिन्न साथ पाकर अलग-अलग रूप पाती है। सत्संगति के प्रभाव की महिमा का इससे पता चलता है कि स्वाति नक्षत्र कीबूँद केले में कपूर, हाथी के मस्तक पर गजमुक्ता, सीप में मोती और सर्प में विष का रूप धारण कर लेती है। काँच के टुकड़े भी सोने में जड़ जाने पर मणियों के समान सुशोभित होते हैं। इसी कारण कहा गया है कि व्यक्ति अपने साथ से जाना-पहचाना जाता है।

सत्संगति मनुष्य के जीवन में आशा का संचार करती है। वह सदा उल्लास व प्रफुल्लता का कारण बनती है। मनुष्य सत्संगति से समाज में सम्मान का पात्र बनता है। जहाँ महात्माओं के शिष्य भी सम्मान के अधिकारी बनते हैं, वहीं दुष्कर्म करने वालों से मिलने वालों को लोग बुरी नज़र से देखते हैं। प्रसिद्‌ध विद्‌वान रामचंद्र शुक्ल ने भी कहा है कि कुसंग का ज्वर बड़ा भयानक होता है।

सभी बुरे व्यसन कुसंगति से आते हैं। बुरे लोगों के साथ रहने भर ही से भले लोग बुरे माने जाते हैं। कुसंग से व्यक्ति का अपना व समाज, दोनों का अहित होता है। कुसंग से सामाजिक बुराइयाँ फैलती है तथा वातावरण दूषित होता है।

बुरे व्यक्तियों के साथ से अनेक प्रकार की हानियाँ होती हैं। गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है। बुरा साथ सदैव निंदा या अपयश दिलाता है और भविष्य को अंधकारमय बनाता है जबकि सत्संगति से अनेक पुण्य प्राप्त होते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने संतों के साथ को तीर्थ के समान पवित्र बताया है।

(i) साथियों का चुनाव हमें सोच समझकर क्यों करना चाहिए? 2

(ii) सत्संगति से मनुष्य जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आते हैं? 2

(iii) कुसंगति से मनुष्य जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आते हैं? 2

(iv) कुसंगति से क्या हानियाँ हो सकती हैं? 1

(v) विपरीत शब्द लिखिए:
प्रत्यक्ष, कुसंग 1

(vi) सत्संगति का प्रभाव अच्छा होता है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 2

(vii) परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए। 1

(viii) निम्न शब्दों के प्रत्यय पृथक कीजिए:
सामाजिक, अधिकारी 1

प्र. 2 जिस पृथ्वी पर हमने जन्म लिया है, जिस समाज में हम रहते हैं, उसके प्रति भी हमारा कुछ कर्तव्य है कि हम उसके उपकारों को सत्कर्मों से निभाने का प्रयास करें।

भगवान की बनाई सृष्टि भी सत्कर्म के बिना नहीं चल सकती। चंदन स्वयं घिसकर दूसरों को ठंढ़क व सुगंध प्रदान करता है। ईख कुचले जाने पर मीठा रस प्रदान करती है। वनस्पति जगत हमें जीवदायी ऑक्सीजन देता है। दीपक स्वयं जलकर प्रकाश देता है।

मानव जाति के उत्थान के लिए, सच्चे मन से किया गया, स्वार्थ रहित कर्म ही सत्कर्म होता है। आज देश को ऐसे ही लोगों की आवश्यकता है। आज देश का व्यापारी वर्ग हो या नेता, सरकारी अफसर हो या दुकानदार - सत्कर्म अपना रूप खो चुका है। व्यक्तिगत स्वार्थ धीरे-धीरे सर्वोपरि हो गया है। पैसे की अंधी चमक, भोगवाद की प्रवृत्ति और भौतिक वस्तुओं की ललक में मनुष्य ने मानवीय संवेदनाओं को भुला दिया है। वह महान भारतीयों के त्याग और प्रकृति के परोपकार को नहीं देख रहा। फलस्वरूप भ्रष्टाचार पनप रहा है, राजनीति का क्षेत्र अखाड़े का दल बन गया है, कालाबाज़ारी और चोरबाज़ारी फल-फूल रहे हैं।

हमें आज अगर मन की शांति चाहिए, तो सत्कर्मों की ओर मुड़ना होगा। मनुष्य के लिए सेवा एक ऐसा धर्म है, जिसे निभा पाना बड़े-बड़े योगियों के लिए भी अत्यंत कठिन है। समाज-सेवा के मार्ग में अनेक प्रलोभन मनुष्य के चित्त को डॉवाडोल करने को प्रेरित करते हैं, परंतु सत्कर्मों से प्रेरित मनुष्य अपने पथ से विचलित नहीं होता। वह निस्वार्थ भाव से मानव-उत्थान के काम में जुटा रहता है।

मानव जीवन बार-बार मिलने वाली चीज़ नहीं है। सत्कर्मों द्वारा की गई सेवा से ही जीवन सार्थक बनता है। समाज में व्याप्त अनैतिकता को इसी रास्ते पर चलकर दूर किया जा सकता है और स्वस्थ और सुंदर समाज का निर्माण किया जा सकता है।

(i) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए? 1

(ii) हमारा किसके प्रति क्या कर्तव्य है? 1

(iii) कुछ ऐसे पदार्थों का उल्लेख कीजिए, जो दूसरों पर उपकार करते हैं। 2

(iv) सत्कर्म क्या होता है? 1

(v) आज के मनुष्य का स्वभाव कैसा हो गया है? 1

(vi) आज हमारालक्ष्य क्या होना चाहिए? 2

**खण्ड – ख**

प्र. 3 समय का महत्व बताते हुए अमर की ओर से छोटे-भाई को पत्र लिखिए।

अथवा

आकाश की ओर से पिताजी से दोस्तों के साथ शिमला जाने की अनुमति माँगते हुए पत्र लिखिए। 5

प्र. 4 संकेत बिंदुओं के आधार पर किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिएः 5

(क) विद्यार्थी जीवन और फैशन

- भूमिका
- फैशन का अभिप्राय
- विद्यार्थियों पर बढ़ते फैशन का प्रभाव
- फैशन के दुष्प्रभाव
- समाधान रूपी निष्कर्ष

(ख) व्यायाम और खेल

- स्वास्थ्य का जीवन में महत्व
- व्यायाम और खेल में अंतर
- व्यायाम के प्रकार
- खेल : मनोरंजन का साधन

**खण्ड – ग**

प्र. 5 (i) 'प्रतिकूल' एवं 'सर्वप्रथम' शब्दों का वर्ण विच्छेद कीजिए। 1

(ii) 'र' के विभिन्न रूपों के आधार पर सार्थक शब्द बनाइएः
यथाकम, निणय, कब, कदम 1

(iii) अनुस्वार एवं अनुनासिक चिह्न लगाकर सार्थक शब्द बनाइएः
कठ, चाद, पखा, महिलाए 2

प्र. 6 (i) 'दुर' एवं 'अभि' उपसर्ग से शब्द बनाइए। ½

(ii) 'प्रारंभ' शब्द का उपसर्ग और मूल शब्द पृथक कीजिए। ½

(iii) 'ईला' एवं 'आई' प्रत्यय से शब्द बनाइए। ½

(iv) 'वास्तविक' शब्द का मूल शब्द और प्रत्यय पृथक कीजिए। ½

(v) 'संतोषजनक' शब्द का उपसर्ग, मूल शब्द और प्रत्यय पृथक कीजिए। 1

प्र. 7 (i) 'गाय' एवं 'ध्वज' शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए। 1

(ii) 'प्रसिद्ध' एवं 'कर्मठ' शब्दों के विलोम लिखिए। 1

(iii) 'जवान' एवं 'पूर्व' शब्दों के अनेकार्थी शब्द लिखिए। 1

(iv) वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए: 1

(क) जिसकी आत्मा महान हो -

(ख) काम से जी चुराने वाला -

(ग) जल में रहने वाला -

(घ) जहाँ पहुँचा न जा सकें -

प्र. 8 निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए: 3

(क) पौधे लगाकर माली चला गया। (संयुक्त वाक्य में)

(ख) लड़का गाँव गया। वहाँ बीमार हो गया। (सरल वाक्य में)

(ग) सूरज निकलने पर आकाश में तारे छिप गए। (मिश्र वाक्य में)

प्र. 9 मुहावरे का वाक्यों में प्रयोग कीजिए: 3

क) अंधेर होना

ख) तहस नहस करना

ग) झड़ी लगना

प्र. 10 विराम चिह्न लगाए: 3

अरे तू लौट कैसे आया पिक्चर नहीं देखी माँ ने पूछा

## खण्ड – घ

प्र. 11 पद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दीजिए:

वृक्ष हों भले खड़े
हों घने, हों बड़े.
एक पत्र-छाँह भी माँग मत, माँग मत, माँग मत!
अग्नि पथ!अग्नि पथ! अग्नि पथ!
तू न थकेगा कभी!
तू न थमेगा कभी!
तू न मुड़ेगा कभी! – कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ!
अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए। 1

(ख) 'अग्निपथ' का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 2

(ग) 'वृक्ष खड़े और घने हों' – के द्वारा कवि क्या कहना चाहता है? 1

(घ) कवि कौन सी शपथ लेने की बात कर रहा है? 1

**अथवा**

गाकर गीत विरह के तटिनी
वेगवती बहती जाती है,
दिल हल्का कर लेने को
उपलों से कुछ कहती जाती है।
तट पर एक गुलाब सोचता,
"देते स्वर यदि मुझे विधाता,
अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए। 1

(ख) नदी किससे, क्या और क्यों कुछ कहती है? 2

(ग) गुलाब जग को कौन सा गीत सुनाना चाहता है? 1

(घ) 'नदी' शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए? 1

(ग) 'पतझर' शब्द का विलोम शब्द लिखिए। 1

प्र. 12 निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3 X 3 = 9

(क) कवि एक घर पीछे या दो घर आगे क्यों चल देता है?

(ख) जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता?

(ग) खुशबू रचने वाले हाथ कैसी परिस्थितियों में कहाँ रहते हैं?

(घ) 'आदमीनामा' कविता का संदेश लिखिए.

प्र. 13 निम्न गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए:

लड़के की बुढ़िया माँ बावली होकर ओझा को बुला लाई। झाड़ना-फूँकना' हुआ। नागदेव की पूजा हुई। पूजा के लिए दान-दक्षिणा चाहिए। घर में जो कुछ आटा और अनाज था, दान-दक्षिणा में उठ गया। माँ, बहू और बच्चे 'भगवाना' से लिपट-लिपटकर रोए, पर भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला। सर्प के विष से उसका सब बदन काला पड़ गया था।

ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाए? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी-ककना ही क्यों न बिक जाएँ।

(क) पाठ तथा लेखक का नाम बताइए। 1

(ख) माँ ने भगवाना को बचाने के लिए क्या-क्या उपाय किए? 2

(ग) भगवाना कैसे मर गया? 1

(घ) माँ के हाथ से छन्नी-ककना क्यों बिक गए? 1

(ङ) पाठ में समाज में फैले किस अंधविश्वास को बेनकाब किया गया है?

**अथवा**

अपने शरीर पर कीचड़ उड़े यह किसी को भी अच्छा नहीं लगता और इसलिए कीचड़ के लिए किसी को सहानुभूति नहीं होती। यह सब यथार्थ है। किंतु तटस्थता से सोचें तो हम देखेंगे कि कीचड़ में कुछ कम सौन्दर्य

नहीं है। पहले तो यह कि कीचड़ का रंग बहुत सुंदर है। पुस्तकों के गत्तों पर, घरों की दीवालों पर अथवा शरीर पर के कीमती कपड़ों के लिए हम सब कीचड़ के जैसे रंग पसंद करते हैं। कलाभिज्ञ लोगों को भट्टी में पकाए हुए मिट्टी के बर्तनों के लिए यही रंग बहुत पसंद है। फोटो लेते समय भी यदि उसमें कीचड़ का, एकाध ठीकरे का रंग आ जाए तो उसे वार्मटोन कहकर विज्ञ लोग खुश हो जाते हैं। पर लो, कीचड़ का नाम लेते ही सब बिगड़ जाता है।

(क) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए। 1

(ख) कीचड़ से किसी को सहानुभूति क्यों नहीं है? 2

(ग) निष्पक्षता से सोचने पर क्या निष्कर्ष निकलता है? 1

(घ) कीचड़ का रंग कहाँ-कहाँ पसंद किया जाता है? 2

प्र. 14 निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3 X 3 = 9

(क) रामन की खोज 'रामन प्रभाव' क्या है? स्पष्ट कीजिए।

(ख) धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना क्यों नहीं की जा सकती?

(ग) हिमपात किस तरह होता है और उससे क्या-क्या परिवर्तन आते हैं?

(घ) महादेव जी के किन गुणों ने उन्हें सबका लाड़ला बना दिया?

प्र. 15 "यह धर्मयात्रा है। चलकर पूरी करूँगा।" – गांधीजी के इस कथन द्वारा उनके किस चारित्रिक गुण का परिचय प्राप्त होता है? 4

अथवा

साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाईं?

प्र. 16 किन्हीं तीन प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए:- 2+2+2 = 6

(क) लेखक का ऑपरेशन करने से सर्जन क्यों हिचक रहे थे?

(ख) लेखक का परिचय हामिद खाँ से किन परिस्थितियों में हुआ?

(ग) लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था?

(घ) मक्खनपुर जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी?

प्र. 17 मौखिक अभिव्यक्ति। 10